आदर्श महिला महाविद्यालय,भिवानी की मासिक पत्रिका

अनुपमा यात्रा

वर्षः 03/ संस्करणः 04 पृष्ठः 08/ मूल्यः 5 रूपये | भिवानी, शुक्रवार 10 अप्रैल 2026 | anupama.express@ammb.ac.in

एलुमनी मीट-2026 'सखी संगम' होगा ऐतिहासिकः डॉ. रेनू

विभिन्न क्षेत्रों में महाविद्यालय का नाम देशभर में रोशन करने वाली पूर्व छात्राओं का होगा सम्मान

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय एलुमनी एसोसिएशन द्वारा आगामी 25 अप्रैल को महाविद्यालय परिसर में आयोजित होने वाला एलुमनी मीट-2026 'सखी संगम' अब व्यापक और प्रेरणादायक स्वरूप लेता जा रहा है। इस आयोजन को यादगार बनाने के लिए एसोसिएशन ने महाविद्यालय की उन पूर्व छात्राओं को सम्मानित करने का निर्णय लिया है, जिन्होंने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कर संस्थान का नाम प्रदेश ही नहीं बल्कि देशभर में रोशन किया है। ये जानकारी देते हुए एसोसिएशन की अध्यक्ष डॉ. रेनू ने बताया कि इस वर्ष आयोजित होने वाला 'सखी संगम' केवल एक मिलन समारोह नहीं होगा, बल्कि यह एक ऐसा मंच बनेगा जहां पूर्व छात्राएं अपने अनुभव साझा कर वर्तमान छात्राओं को प्रेरित करेंगी। इसी उद्देश्य से नेतृत्व, सृजन और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली पूर्व छात्राओं को विशेष सम्मान प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इन पुरस्कारों के तहत ये पुरस्कार नेतृत्व के क्षेत्र में उस पूर्व छात्रा को दिया जाएगा, जिसने प्रशासन, राजनीति या किसी सामाजिक संस्था में

प्रभावी नेतृत्व का परिचय देते हुए समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसे नेतृत्व ने न केवल समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया है, बल्कि नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का मार्ग भी प्रशस्त किया है। इसी प्रकार सृजन के तहत कला, साहित्य, संगीत अथवा सांस्कृतिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाली पूर्व छात्रा को प्रदान किया जाएगा। इस सम्मान का उद्देश्य उन प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना है, जिन्होंने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से समाज में सांस्कृतिक चेतना को सशक्त किया और कला-संस्कृति की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाया। इसके अतिरिक्त उद्यमिता सम्मान उस पूर्व छात्रा को दिया जाएगा जिसने व्यापार, उद्योग या उद्यमिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता हासिल कर आत्मनिर्भरता का उदाहरण प्रस्तुत किया है। एसोसिएशन अध्यक्ष डॉ. रेनू ने बताया कि 'सखी संगम' के लिए तैयारियां जोरों पर चल रही हैं और देश के विभिन्न शहरों में रह रही महाविद्यालय की पूर्व छात्राओं से संपर्क कर उन्हें इस कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण भेजा जा रहा है। जिसके तहत सभी छात्राओं को पत्र के द्वारा निमंत्रण भेजे जा रहे हैं और लगभग 8 हजार छात्राओं को ईमेल भी कि जा चुकी है। इसी कड़ी में व्हाट्सअप, एसएमएस व मोबाईल कॉल के माध्यम से भी छात्राओं से सम्पर्क कर उन्हें आमंत्रित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस बार बड़ी संख्या में पूर्व छात्राएं इस आयोजन में भाग लेंगी और अपने पुराने साथियों से मिलकर इस दिन को यादगार बनाएंगी। एलुमनी मीट-2026 'सखी संगम' का उद्देश्य महाविद्यालय की पूर्व छात्राओं को एक मंच पर लाकर अपने छात्र जीवन की यादों को साझा करना और महाविद्यालय के साथ अपने जुड़ाव को फिर से जीवंत करना है।

महाविद्यालय का भव्य दीक्षांत समारोह 24 अप्रैल को

छात्राओं को मिलेंगी डिग्रियां और सम्मान

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय में आगामी 24 अप्रैल 2026 को भव्य दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाएगा। ये जानकारी देते हुए महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने बताया कि इस समारोह में चै. बंसीलाल विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. दीप्ति धर्माणी बतौर मुख्यातिथि शिरकत करेंगी। उन्होंने बताया कि प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष अजय गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित होने वाले इस महत्वपूर्ण समारोह में महाविद्यालय की छात्राओं को उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए डिग्रियां एवं सम्मान प्रदान किए जाएंगे। समारोह को लेकर महाविद्यालय प्रशासन द्वारा व्यापक स्तर पर तैयारियां की जा रही हैं। महाविद्यालय प्रबंधन के अनुसार, दीक्षांत समारोह में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की छात्राओं को डिग्रियां वितरित की जाएंगी। साथ ही उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत कर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। इस समारोह में देश व प्रदेश की अनेक ख्याति प्राप्त विभूतियां बतौर अतिथि शिरकत करेंगी। इस आयोजन को लेकर परिसर में विशेष सजावट, सुरक्षा व्यवस्था और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी तैयारी की जा रही है, जिससे यह दिन छात्राओं के लिए यादगार बन सके। यह दीक्षांत समारोह छात्राओं के लिए उनके परिश्रम, समर्पण और सफलता का उत्सव होगा, जो उन्हें जीवन की नई ऊंचाइयों की ओर प्रेरित करेगा।

प्रतिभाशाली छात्रा आशा ने राष्ट्रीय युवा महोत्सव में किया संस्थान का नाम रोशन

भिवानी। महाविद्यालय की प्रतिभाशाली छात्रा आशा ने चेन्नई में आयोजित राष्ट्रीय युवा महोत्सव में रंगोली प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर संस्थान का नाम रोशन किया है। यह प्रतिष्ठित महोत्सव 10 से 14 मार्च 2026 तक आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से आए युवा प्रतिभागियों ने अपनी कला और कौशल का प्रदर्शन किया। आशा ने अपनी अद्भुत रचनात्मकता, सूक्ष्म कलात्मकता और समर्पण के बल पर यह उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। उनकी बनाई गई रंगोली ने न केवल दर्शकों बल्कि निर्णायकों का भी मन मोह लिया। उनकी इस सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि लगन और मेहनत के साथ प्रतिभा को

निखारा जाए, तो कोई भी लक्ष्य दूर नहीं होता। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने आशा की इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है। उन्होंने आशा के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए अन्य विद्यार्थियों को भी इससे प्रेरणा लेने का संदेश दिया।

18 अप्रैल को जॉब फेयर, युवाओं के लिए सुनहरा अवसर

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय में 18 अप्रैल 2026 को एक विशाल जॉब फेयर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्रदेशभर के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। यह जॉब फेयर युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है। इस जॉब फेयर में विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियां भाग लेंगी और योग्य अभ्यर्थियों का चयन करेंगी। फाईनैंस, बैंकिंग, आईटी, फार्मा, इंश्योरेंस, टैक्सटाईल सहित लगभग हर प्रमुख सेक्टर में रोजगार के अवसर उपलब्ध रहेंगे। इससे छात्र-छात्राओं को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार करियर चुनने का सुनहरा मौका मिलेगा। इस आयोजन की खास बात यह है कि इसमें केवल महाविद्यालय की छात्राएं ही नहीं, बल्कि प्रदेशभर के विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्र-छात्राएं भी हिस्सा ले सकते हैं। इससे यह जॉब फेयर एक बड़े प्लेटफॉर्म के रूप में उभरकर सामने आएगा, जहां युवा सीधे कंपनियों के प्रतिनिधियों से संवाद कर सकेंगे और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर पाएंगे। पंजीकरण की अंतिम तिथि 10 अप्रैल निर्धारित की गई है। इच्छुक अभ्यर्थियों को समय रहते अपना पंजीकरण करवाने के लिए कहा गया है, ताकि वे इस अवसर का लाभ उठा सकें। महाविद्यालय प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि केवल पंजीकृत अभ्यर्थियों को ही जॉब फेयर में भाग लेने की अनुमति दी जाएगी। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने इस पहल को युवाओं के भविष्य निर्माण की दिशा में एक सकारात्मक कदम बताते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि छात्रों के आत्मविश्वास को भी बढ़ाते हैं। उन्होंने कहा कि बदलते समय में रोजगार के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, ऐसे में इस तरह के प्लेटफॉर्म छात्रों को अपनी क्षमताओं को निखारने और सही दिशा में आगे बढने का अवसर देते हैं। जॉब फेयर के दौरान कंपनियों द्वारा इंटरव्यू, ग्रुप डिस्कशन और स्किल असेसमेंट जैसी प्रक्रियाएं भी आयोजित की जाएंगी। इसके अलावा, करियर काउंसलिंग सेशन भी आयोजित किए जाएंगे, जिससे छात्रों को अपने करियर के चयन में मार्गदर्शन मिल सके। महाविद्यालय परिसर में इस आयोजन को लेकर व्यापक तैयारियां की जा रही हैं। सुरक्षा व्यवस्था, तकनीकी सुविधाएं और अन्य व्यवस्थाओं को सुदृढ़ किया जा रहा है, ताकि प्रतिभागियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। साथ ही, आयोजन स्थल को आकर्षक ढंग से सजाया जा रहा है, जिससे प्रतिभागियों को एक सकारात्मक और प्रेरणादायक माहौल मिल सके।

यह जॉब फेयर न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करेगा, बल्कि युवाओं के लिए एक नई दिशा और उम्मीद का मंच भी साबित होगा। महाविद्यालय प्रशासन ने सभी इच्छुक युवाओं से अपील की है कि वे समय पर पंजीकरण कर इस सुनहरे अवसर का लाभ अवश्य उठाएं।

38 वर्षों के अध्यापनकाल उपरांत सेवानिवृत हुई डॉ. अर्पणा बत्रा

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापिका एवं उप-प्राचार्या डॉ. अर्पणा बत्रा के 38 वर्षों के दीर्घ, समर्पित एवं गौरवपूर्ण सेवाकाल की पूर्णता पर उनके सम्मान में एक भावनात्मक एवं गरिमामयी सेवानिवृत्ति समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय का सभागार भावनाओं, स्मृतियों और सम्मान के रंगों से सराबोर नजर आया। इस मौके पर महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि डॉ. अर्पणा बत्रा संस्था की एक मजबूत आधारशिला रही हैं, जिन्होंने हर परिस्थिति में संस्था की उज्जवलता और उन्नति को सर्वोपरि रखा। पुराने संस्मरणों को याद करते हुए बुवानीवाला ने कहा कि उन्हें आज भी अच्छी तरह याद है जब 1988 में उनके पिता शादी लाल बत्रा उन्हें महाविद्यालय छोडने आए थे और आज का दिन हम सबको भावुक करने वाला है क्योंकि वो उन्हें वापिस ले जाने पुनः महाविद्यालय पधारें है। उन्होंने कहा कि डॉ. बत्रा ने कर्मठता, निष्ठा और ईमानदारी से यह सिद्ध किया है कि सच्ची लगन और समर्पण से किसी भी संस्था को ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने हमेशा अपने सहकर्मियों को परिवार की तरह समझा और हर छोटे-बड़े कार्य में मार्गदर्शन दिया। डॉ. बत्रा का सरल, सहज और सहयोगी स्वभाव सभी के लिए प्रेरणादायक रहा है। अपने संबोधन में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने कहा कि डॉ. अर्पणा बत्रा केवल एक उत्कृष्ट शिक्षिका ही नहीं, बल्कि एक सशक्त मार्गदर्शक, अनुशासनप्रिय और संवेदनशील

व्यक्तित्व की धनी रही हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल में शिक्षा के साथ-साथ छात्राओं में नैतिक मूल्यों, आत्मविश्वास और संस्कारों का भी संचार किया। प्राचार्या ने कहा कि डॉ. बत्रा का महाविद्यालय से जुड़ाव केवल कर्तव्य तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक आत्मीय रिश्ते में बदल गया था। उनका स्नेह और मार्गदर्शन सदैव हमारे साथ रहेगा। समारोह के अंत में डॉ. अर्पणा बत्रा ने अत्यंत भावुक होकर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह महाविद्यालय मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। यहां बिताए गए 38 वर्ष मेरे लिए केवल सेवा का समय नहीं, बल्कि सीखने, सिखाने और रिश्ते बनाने का अनमोल सफर रहा है। उन्होंने प्रबंधन, प्राचार्या, अपने सहकर्मियों एवं छात्राओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें यहां सदैव परिवार जैसा स्नेह और सम्मान मिला। उन्होंने कहा कि इस संस्थान की यादें उनके हृदय में सदैव जीवित रहेंगी। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी शिक्षक, गैर शिक्षक स्टाफ एवं छात्राओं ने डॉ. अर्पणा बत्रा के स्वस्थ, सुखद एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें भावभीनी विदाई दी। इस मौके पर अर्पणा बत्रा के पिता पूर्व राज्यसभा सांसद शादी लाल बत्रा, उनकी बहनें डॉ. अंजली एवं डॉ. गीतांजली सहित परिवार के अनेक सदस्यगण मौजूद रहें।

महिला आरक्षण पर खत्म हुआ संशय: परिसीमन के फैसले से बदलेगी राजनीति की तस्वीर

लोकसभा में सदस्यों की संख्या हो जाएगी 816, महिला सांसदों के लिए आरक्षित होंगी 273 सीटें ‹› राज्यों की विधानसभाओं में भी बदलेंगे समीकरण

नई दिल्ली। केंद्र सरकार नारी शक्ति वंदन अधिनियम (महिला आरक्षण) के तहत संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण लागू करने के लिए कानूनों में संशोधन की तैयारी कर चुकी है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के विभिन्न दलों के सांसदों के साथ बैठकों से साफ है कि सरकार इसी सत्र में विधेयक पारित कराने के लिए प्रतिबद्ध है। दरअसल, 19 सितंबर 2023 को यह अधिनियम पारित करते समय इसमें जनगणना के बाद होने वाले परिसीमन और 2029 लोकसभा चुनाव से लागू करने की घोषणा की गई। अब सरकार दोनों कार्य संविधान संशोधन के जरिए करना चाहती है। जनगणना के आंकड़ों में समय लग सकता है, इसलिए सरकार 2011 की जनगणना के आधार पर ही नया परिसीमन करने जा रही है। वास्तव में नई जनगणना होने और उसके आंकड़े आने में इतना समय निकल जाएगा कि 2029 के चुनाव तक परिसीमन नहीं हो पाएगा। सरकार ने चूंकि 2029 का वादा किया था, तो इसका रास्ता संविधान संशोधन ही हो सकता है। सरकार बजट सत्र में ही विधेयक पारित कराना चाहती है। वैसे तो कोई दल इसके खिलाफ नहीं जा सकता, लेकिन वर्तमान राजनीतिक माहौल में यह आसान भी नहीं है। संविधान संशोधन पारित कराने के लिए संसद में दो-तिहाई बहुमत चाहिए, जो सरकार के पास नहीं है, इसलिए आम सहमति बनाने की कोशिश है। संशोधन के जरिए लोकसभा में सदस्यों की संख्या 543 से बढ़कर 816 हो सकती है। इससे संसद में बहुमत का आंकड़ा भी बढ़कर 409 हो जाएगा और महिला के लिए आरक्षित सीटों की संख्या 273 हो जाएगी। इसी सूत्र के आधार पर राज्यों की विधानसभाओं में भी सीटें बढ़ाने और महिलाओं के लिए आरक्षण लागू करने की योजना है। यह बढ़ोतरी आनुपातिक हो सकती है। जैसे- उत्तर प्रदेश में 80 की जगह 120 लोकसभा सीटें, बिहार में 40 की जगह 60 और तमिलनाडु में 39 की जगह 58-59 सीटें। इस तरह सीट वृद्धि से महिलाओं को आरक्षण से किसी को समस्या भी नहीं आएगी। परिसीमन का मतलब है संसदीय और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं को फिर से निर्धारित करने की

प्रक्रिया। ऐसा इसलिए ताकि जनसंख्या में हुए बदलाव के अनुरूप इन्हें समायोजित किया जा सके। संविधान के अनुच्छेद 82 के अंतर्गत संसद हर जनगणना के बाद एक परिसीमन अधिनियम पारित करती है। इसके आधार पर राष्ट्रपति परिसीमन आयोग का गठन करते हैं। परिसीमन आयोग के आदेशों को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। इसके आदेशों की प्रतियां सदन में रखी जाती हैं, लेकिन उनमें संशोधन की अनुमति नहीं होती। कई हलकों में सवाल है क्या संविधान संशोधन के जरिए ऐसा किया जा सकता है? इसका उत्तर है, हां। ध्यान रखिए, लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के सदस्यों की संख्या में यह वृद्धि पांच दशकों में पहली बार होगी। अब तक 1952, 1963, 1973 और 2002 में परिसीमन आयोगों का गठन किया जा चुका है। आजादी के बाद के शुरुआती दशकों में परिसीमन की वजह से लोकसभा क्षेत्रों की संख्या बढ़ती रही। 1951 की जनगणना के बाद यह 489 से बढ़कर 494, 1961 की जनगणना के बाद 522 और 1971 की जनगणना के बाद 543 तक पहुंच गई। यही संख्या आज तक कायम है। सरकार ने जनसंख्या नियंत्रण उपायों को बढ़ावा देने के लिए 2001 तक लोकसभा सीटों की संख्या को फ्रीज करने का फैसला किया। बाद में इसे 2026 तक बढ़ा दिया गया। साल 2002 में गठित परिसीमन आयोग ने 2001 की जनगणना के आधार पर निर्वाचन क्षेत्र की सीमाओं को फिर से निर्धारित किया, पर इसका उद्देश्य सीटें बढ़ाना नहीं, निर्वाचन क्षेत्र की सीमाओं को समायोजित करके जनसंख्या के प्रतिनिधित्व को संतुलित करना था। यानी जनसंख्या बढ़ती रही, पर सांसदों की संख्या नहीं बढ़ी। तब भी दक्षिण के राज्यों की चिंता एक बड़ा कारण थी। साथ ही, नेताओं का यह भय भी था कि अगर 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के नाम हो गईं, तो उनमें से तमाम चेहरे राजनीति से बाहर हो जाएंगे।

मेरे महाविद्यालय से मिली पहचान: एक अलग सोच, एक नई उड़ान

— अनुराधा गुप्ता, आईएएस

कभी-कभी अपने भविष्य को लेकर किए गए छोटे-छोटे फैसले आगे चलकर हमारी पूरी दिशा तय कर देते हैं। मेरे लिए इस महाविद्यालय में प्रवेश लेना ऐसा ही एक निर्णय था, जिसने मुझे केवल शिक्षा ही नहीं दी, बल्कि सोचने का तरीका और अपने लक्ष्य को देखने का नजरिया भी बदल दिया। इस महाविद्यालय की सबसे खास बात यह रही कि हमें सवाल पूछने, अपनी बात रखने और हर विषय को गहराई से समझने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यही स्वतंत्र सोच आगे चलकर मेरे लिए सबसे बड़ी ताकत बनी, खासकर उस समय जब मैंने सिविल सेवा की तैयारी शुरू की। मुझे आज भी याद है, जब हम कक्षा में किसी सामाजिक मुद्दे पर चर्चा करते थे, तो वह केवल एक विषय नहीं रहता था, बल्कि एक जिम्मेदारी बन जाता था। यहीं से मेरे भीतर समाज को समझने और उसके लिए कुछ करने की भावना विकसित हुई। यही भावना मुझे प्रशासनिक सेवा की ओर लेकर गई। महाविद्यालय का वातावरण हमेशा प्रेरणादायक रहा। यहां हर छात्रा को यह विश्वास दिलाया जाता था कि उसकी आवाज मायने रखती है। शायद यही कारण है कि यहां से निकलने वाली छात्राएं केवल डिग्री लेकर नहीं जातीं, बल्कि एक मजबूत व्यक्तित्व के साथ समाज में अपनी पहचान बनाती हैं। मेरे लिए यह संस्थान एक ऐसा स्थान रहा, जहां मैंने असफलताओं से

घबराना नहीं, बल्कि उनसे सीखकर आगे बढ़ना सीखा। प्रतियोगिताओं में हार हो या पढ़ाई का दबाव–हर अनुभव ने मुझे थोड़ा और मजबूत बनाया। यही मजबूती सिविल सेवा की कठिन यात्रा में मेरे काम आई। मैं जब अपने कार्यक्षेत्र में निर्णय लेती थी, तो कहीं न कहीं इस महाविद्यालय की सीख मेरे साथ होती थी–चाहे वह निष्पक्षता हो, संवेदनशीलता हो या फिर लोगों की समस्याओं को समझने का नजरिया। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकती हूं कि इस महाविद्यालय ने मुझे केवल एक छात्रा नहीं, बल्कि एक सोचने-समझने वाली जिम्मेदार नागरिक बनाया। यहां की सीख मेरे हर कदम के साथ चलती है।

महाविद्यालय से शुरू हुई अनुशासन, आत्मविश्वास और सेवा भाव की सशक्त यात्रा

- संगीता कालिया आईपीएस, संयुक्त पुलिस आयुक्त, गुरुग्राम

किसी भी सफल व्यक्ति की कहानी केवल उसकी उपलब्धियों तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसके पीछे छिपे संघर्ष, सीख और मूल्यों का भी उतना ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ अधिकारी एवं गुरुग्राम की संयुक्त पुलिस आयुक्त संगीता कालिया की प्रेरणादायक यात्रा भी कुछ ऐसी ही है, जिसकी मजबूत नींव उनके महाविद्यालय के दिनों में ही रखी गई थी। संगीता कालिया अपने महाविद्यालय जीवन को याद करते हुए बताती हैं कि वह समय उनके व्यक्तित्व निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण चरण था। एक साधारण छात्रा के रूप में महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाली संगीता ने वहीं अपने अंदर छिपी क्षमताओं को पहचाना और उन्हें निखारने का अवसर प्राप्त किया। वे कहती हैं कि महाविद्यालय ने मुझे केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि यह भी सिखाया कि जीवन में लक्ष्य कैसे निर्धारित किए जाते हैं और उन्हें हासिल करने के लिए निरंतर प्रयास कैसे किया जाता है। महाविद्यालय के दिनों में उनका झुकाव पढ़ाई के साथ-साथ अनुशासन और आत्म-प्रबंधन की ओर विशेष रूप से रहा। वे मानती हैं कि पुलिस सेवा जैसे जिम्मेदार और चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में जाने के लिए जिस मानसिक दृढ़ता और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है, उसकी शुरुआत उसी समय से हो चुकी थी। उस दौर में सीखा गया समय प्रबंधन, आत्मनियंत्रण और निरंतरता आज भी मेरे

कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा है। अपने कॉलेज के अनुभवों को साझा करते हुए वे बताती हैं कि शिक्षकों का मार्गदर्शन उनके जीवन में निर्णायक भूमिका निभाता रहा। संगीता कालिया विशेष रूप से इस बात पर जोर देती हैं कि महाविद्यालय एक ऐसा मंच होता है, जहाँ व्यक्ति खुद को हर दृष्टि से परख सकता है। वे बताती हैं कि उस समय उन्होंने विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर अपनी अभिव्यक्ति और निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत किया। उनकी सोच में एक स्पष्टता और दृढ़ता नजर आती है। वे कहती हैं कि जीवन में कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता, यदि व्यक्ति के पास स्पष्ट दृष्टि और उसे प्राप्त करने की सच्ची लगन हो। उनके इस विचार में उनके महाविद्यालय के दिनों की सीख साफ झलकती है, जिसने उन्हें हर परिस्थिति में संतुलित और दृढ़ बनाए रखा। आज एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में वे न केवल कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, बल्कि समाज में सुरक्षा और विश्वास का वातावरण भी तैयार कर रही हैं। वे मानती हैं कि यह जिम्मेदारी केवल एक पद नहीं, बल्कि एक सेवा है, जिसे पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाना आवश्यक है। महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में संगीता कालिया का मानना है कि शिक्षा ही वह माध्यम है, जो उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बना सकता है। वे कहती है कि महाविद्यालय के दिनों में ही यदि लड़कियां अपने लक्ष्य को स्पष्ट कर लें और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें, तो वे किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं। आज के विद्यार्थियों के लिए उनका संदेश बेहद स्पष्ट और सार्थक है महाविद्यालय का समय केवल परीक्षा पास करने के लिए नहीं, बल्कि खुद को तैयार करने के लिए होता है। इस समय का सही उपयोग करें, अनुशासन को अपनाएं और अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार रहें। उनकी यह यात्रा यह साबित करती है कि सफलता अचानक नहीं मिलती, बल्कि यह छोटे-छोटे प्रयासों, मजबूत संकल्प और सही दिशा में किए गए निरंतर परिश्रम का परिणाम होती है। संगीता कालिया के शब्दों में एक गहराई और अनुभव की झलक है, जो हर युवा को अपने जीवन में कुछ बड़ा करने के लिए प्रेरित करती है।

मेरे व्यक्तित्व की नींव : महाविद्यालय के साथ मेरे अविस्मरणीय अनुभव

— चित्रलेखा शर्मा

मेरे जीवन की यात्रा में यदि किसी संस्था ने मेरे व्यक्तित्व को दिशा, दृष्टि और दृढ़ता प्रदान की है, तो वह मेरा महाविद्यालय है। आज जब मैं भारत सरकार के गृह मंत्रालय में डायरेक्टर के पद पर कार्यरत हूँ, तो गर्व के साथ कह सकती हूँ कि मेरी इस उपलब्धि के पीछे मेरे महाविद्यालय की शिक्षा, अनुशासन और संस्कारों का अमूल्य योगदान है। महाविद्यालय में बिताए गए वे वर्ष केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं थे, बल्कि यह मेरे सर्वांगीण विकास का आधार बने। यहाँ मुझे केवल किताबों का ज्ञान ही नहीं मिला, बल्कि जीवन को समझने और उसे बेहतर तरीके से जीने की कला भी सिखाई गई। महाविद्यालय का अनुशासित वातावरण, शिक्षकों का मार्गदर्शन और सहपाठियों का सहयोग–इन सभी ने मिलकर मेरे व्यक्तित्व को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से, महाविद्यालय के

शिक्षकों का योगदान मैं कभी नहीं भूल सकती। उन्होंने हमें केवल विषयों का ज्ञान नहीं दिया, बल्कि हमें आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और निर्णय लेने की शक्ति भी प्रदान की। कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने हमें प्रेरित किया कि हम अपने लक्ष्य से विचलित न हों। उनके द्वारा दी गई सीख आज भी मेरे हर निर्णय में परिलक्षित होती है। महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक, शैक्षणिक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों ने भी मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई। इन मंचों ने मुझे अपनी प्रतिभा को पहचानने और उसे निखारने का अवसर दिया। वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, सेमिनार और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने से मेरे विचारों में व्यापकता आई और समाज के प्रति मेरी जिम्मेदारियों का बोध हुआ। आज जब मैं अपने कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण निर्णय लेती हूँ और देश की सेवा में योगदान देती हूँ, तो मुझे यह अहसास होता है कि यह सब संभव हो पाया है तो केवल मेरे महाविद्यालय की मजबूत नींव के कारण। यहाँ मिली शिक्षा ने मुझे न केवल एक सक्षम अधिकारी बनाया, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक भी बनाया। मैं अपने महाविद्यालय के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिसने मुझे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और हर चुनौती का सामना करने की शक्ति प्रदान की। मेरा यह विश्वास है कि यह संस्था आने वाली पीढ़ियों को भी इसी प्रकार सशक्त और प्रेरित करती रहेगी। अंत में, मैं यही कहना चाहूँगी कि महाविद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं होता, बल्कि यह वह स्थान होता है जहाँ से जीवन की वास्तविक शुरुआत होती है। मेरे लिए यह हमेशा एक प्रेरणा स्रोत रहेगा और मैं गर्व के साथ स्वयं को इसकी पूर्व छात्रा कहती हूँ।

जड़ों से जुड़ी सफलता: कीर्ति चौहान की महाविद्यालयीन यादें और प्रेरक सफर

सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचना जितना महत्वपूर्ण होता है, उतना ही जरूरी होता है अपनी जड़ों से जुड़े रहना। कीर्ति चौहान इसका एक सुंदर उदाहरण हैं, जो आज सेंट जेवियर्स स्कूल भिवानी की डायरेक्टर के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। लेकिन उनके व्यक्तित्व और नेतृत्व की नींव उनके महाविद्यालय के दिनों में ही रखी गई थी। बकौल कीर्ति चौहान जब अपने महाविद्यालयीन जीवन को याद करती हैं, तो वह समय उनके लिए केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं था, बल्कि आत्म-खोज और आत्म-विकास का एक सुनहरा दौर था। वे बताती हैं कि महाविद्यालय ने उन्हें न केवल शैक्षणिक ज्ञान दिया, बल्कि जीवन को समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित की।

महाविद्यालय का वातावरण उनके लिए बेहद प्रेरणादायक रहा। यहाँ के प्राध्यापक न केवल विषयों के विशेषज्ञ थे, बल्कि वे छात्रों के मार्गदर्शक और प्रेरक भी थे। कीर्ति कहती हैं कि शिक्षकों का स्नेह और अनुशासन का संतुलन उन्हें हमेशा आगे बढने् के लिए प्रेरित करता रहा। उन्होंने हर छात्र की प्रतिभा को पहचानकर उसे निखारने का कार्य किया, जो आज उनके व्यक्तित्व में साफ झलकता है। महाविद्यालय में बिताए गए समय ने कीर्ति के नेतृत्व कौशल को भी विकसित किया।

विभिन्न कार्यक्रमों, आयोजनों और गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी ने उन्हें टीम वर्क, समय प्रबंधन और निर्णय लेने की कला सिखाई। वे विशेष रूप से उन अवसरों को याद करती हैं जब उन्हें किसी कार्यक्रम का संचालन या जिम्मेदारी सौंपी गई–वही क्षण उनके आत्मविश्वास को नई ऊँचाइयों तक ले गए। अपने सहपाठियों के साथ बिताए गए पल भी उनके लिए बेहद खास रहे। दोस्ती, सहयोग और आपसी समझ ने उनके जीवन को समृद्ध बनाया। वे कहती हैं कि महाविद्यालय ने उन्हें रिश्तों की अहमियत सिखाई, जो आज भी उनके जीवन में एक मजबूत आधार के रूप में मौजूद है। कीर्ति चौहान यह भी मानती हैं कि महाविद्यालय ने उन्हें केवल एक सफल प्रोफेशनल बनने की दिशा नहीं दी, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनने की सीख भी दी। समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझना और शिक्षा के माध्यम से बदलाव लाने का संकल्प, उन्हें यहीं से मिला। एक भावुक स्मृति साझा करते हुए वे बताती हैं कि जब उन्होंने अपने करियर की शुरुआत की, तो महाविद्यालय के शिक्षकों और साथियों का आशीर्वाद उनके साथ था। यही कारण है कि आज भी जब वे किसी उपलब्धि को हासिल करती हैं, तो उसका श्रेय अपने महाविद्यालय को देना नहीं भूलतीं। आज, एक शैक्षणिक संस्थान की डायरेक्टर होने के नाते, कीर्ति चौहान अपने महाविद्यालय से सीखी गई मूल्यों को अपने कार्य में उतार रही हैं। वे अपने विद्यालय में भी ऐसा ही सकारात्मक और प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण बनाने का प्रयास करती हैं, जहाँ हर छात्र को अपनी क्षमता पहचानने और आगे बढने् का अवसर मिले। अपने संस्थान से मिले हर अनुभव को संजोएँ, क्योंकि यही अनुभव आपके भविष्य की दिशा तय करते हैं। मेरी यह यात्रा इस बात का प्रमाण है कि एक सशक्त महाविद्यालयीन वातावरण किसी भी छात्र को न केवल सफल बना सकता है, बल्कि उसे एक बेहतर इंसान भी बना सकता है।

महाविद्यालय ने दी नई पहचान

– आईआरएस नेहा भगासरा

जीवन में कुछ पड़ाव ऐसे होते हैं, जो केवल यादों का हिस्सा नहीं बनते, बल्कि हमारी पहचान और दिशा तय करते हैं। मेरे लिए मेरा महाविद्यालय ऐसा ही एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है। आज भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) में कार्य करते हुए जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो यह महसूस करती हूँ कि मेरी सफलता की असली शुरुआत यहीं से हुई थी। महाविद्यालय में प्रवेश लेते समय मेरे मन में कई संकोच और सीमाएँ थीं, लेकिन यहाँ का सकारात्मक और प्रेरणादायक वातावरण मुझे धीरे-धीरे आत्मविश्वास से भरता गया। यहाँ की शिक्षा पद्धति ने मुझे केवल विषयों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि सोचने, समझने और समस्याओं का समाधान खोजने की क्षमता विकसित की। महाविद्यालय के प्राध्यापकों का मार्गदर्शन मेरे जीवन का सबसे बड़ा संबल बना। उन्होंने मुझे यह सिखाया कि सफलता केवल अंक प्राप्त करने में नहीं, बल्कि निरंतर सीखने और खुद को बेहतर बनाने में है। उनकी प्रेरणा ने मुझे सिविल सेवा जैसे कठिन लक्ष्य की ओर बढने् का हौसला दिया। जब भी मैं किसी चुनौती के सामने कमजोर पड़ती, उनके शब्द मुझे फिर से खड़ा कर देते थे। यहाँ का अनुशासन और समय प्रबंधन का महत्व भी मैंने गहराई से सीखा। विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों में भाग लेने से मेरे भीतर नेतृत्व क्षमता और निर्णय लेने की योग्यता विकसित हुई। यही गुण आगे चलकर मेरी तैयारी और सेवा जीवन में बेहद उपयोगी साबित हुए। महाविद्यालय ने मुझे यह भी सिखाया कि एक सच्चा नागरिक वही होता है, जो समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझे और उन्हें निभाए। इसी सोच ने मुझे भारतीय राजस्व सेवा में आकर देश के आर्थिक ढांचे को सशक्त बनाने की प्रेरणा दी। आज मैं जहाँ भी हूँ, उसमें मेरे महाविद्यालय का योगदान अतुलनीय है। यह केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि वह मंच है जिसने मुझे अपने सपनों को पहचानने और उन्हें साकार करने की दिशा दी। मैं अपने महाविद्यालय के प्रति गहरा आभार व्यक्त करती हूँ और आशा करती हूँ कि यह संस्था आगे भी ऐसे ही अनगिनत छात्रों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचने का मार्ग दिखाती रहेगी। मेरे लिए यह स्थान हमेशा गर्व और प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

संघर्ष से सफलता तक महाविद्यालय का मिला साथ

अरूणा तंवर

भारतीय पैरा ताइक्वांडो की जानी-मानी खिलाड़ी अरूणा तंवर नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी सफलता की कहानी केवल खेल उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन संघर्षों, संकल्पों और सहयोगों की कहानी भी है, जिन्होंने उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया। विशेष रूप से उनके महाविद्यालय के अनुभव इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण और भावनात्मक हिस्सा रहे हैं। टीम अनुपमा से विशेष बातचीत के दौरान अपने अनुभवों को सांझा करते हुए अरुणा तंवर जब अपने महाविद्यालय के दिनों को याद करती हैं, तो उनके चेहरे पर एक जोश भरी मुस्कान आ जाती है।

वे कहती हैं कि महाविद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं था, बल्कि यह उनके लिए आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का एक सशक्त मंच भी था। शुरुआत में, एक दिव्यांग खिलाड़ी होने के कारण उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन महाविद्यालय परिवार ने कभी उन्हें अकेला महसूस नहीं होने दिया। महाविद्यालय की प्राचार्या से लेकर और प्राध्यापकों तक ने मेरी प्रतिभा को पहचाना और उसे निखारने में हर संभव सहयोग दिया। चाहे वह प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए विशेष अनुमति देना हो, अभ्यास के लिए समय में लचीलापन देना हो, या फिर मानसिक रूप से प्रोत्साहित करना–हर स्तर पर उन्हें पूरा सहयोग मिला। अरुणा बताती हैं कि जब भी वे किसी प्रतियोगिता के लिए जाती थीं, तो पूरा महाविद्यालय उनके लिए शुभकामनाओं के साथ खड़ा होता था। यह समर्थन उनके आत्मबल को कई गुना बढ़ा देता था। उनकी सहपाठियों का साथ भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। कठिन समय में उनका हौसला बढ़ाना और छोटी-छोटी सफलताओं पर उनके साथ जश्न मनाना, ये सब अरुणा के लिए बेहद खास रहा।

यही कारण है कि वे अपने महाविद्यालय को केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक परिवार मानती हैं। अरुणा तंवर यह भी साझा करती हैं कि महाविद्यालय में आयोजित खेल गतिविधियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने उनके व्यक्तित्व के समग्र विकास में अहम भूमिका निभाई। उन्हें अपने कौशल को प्रदर्शित करने के कई अवसर मिले, जिससे उनका आत्मविश्वास और भी मजबूत हुआ। महाविद्यालय प्रशासन ने उनकी विशेष जरूरतों को समझते हुए उन्हें हर सुविधा उपलब्ध कराई, जिससे वे बिना किसी बाधा के अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकीं। एक भावुक क्षण को याद करते हुए अरुणा कहती हैं कि जब उन्होंने पहली बार पदक जीता, तो महाविद्यालय में उनका भव्य स्वागत किया गया।

उस दिन उन्हें एहसास हुआ कि उनकी सफलता केवल उनकी नहीं, बल्कि पूरे महाविद्यालय की उपलब्धि है। यह सम्मान और अपनापन उनके लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। आज जब अरुणा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रोशन कर रही हैं, तो वे अपने महाविद्यालय के उस योगदान को कभी नहीं भूलतीं, जिसने उनके सपनों को उड़ान दी। वे मानती हैं कि यदि उन्हें सही समय पर सही मार्गदर्शन और प्रोत्साहन न मिला होता, तो शायद वे इस मुकाम तक नहीं पहुँच पातीं। अपने अनुभवों के आधार पर अरुणा तंवर छात्राओं को यही संदेश देती हैं कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, यदि आपके पास दृढ़ संकल्प और सही मार्गदर्शन है, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। मेरा महाविद्यालय जीवन की उस मजबूत नींव की तरह है, जिस पर मैंने अपने सपनों की ऊँची इमारत खड़ी की।

महाविद्यालय से मिला जीवन का मार्ग

– आशा पाहुजा (डायरेक्टर, भिवानी पब्लिक स्कूल)

शिक्षा केवल डिग्री हासिल करने का माध्यम नहीं होती, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण की सबसे मजबूत नींव होती है। इसी विचार को साकार करती हैं भिवानी पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर आशा पाहुजा, जिन्होंने अपने महाविद्यालय के दिनों को याद करते हुए बताया कि उनके जीवन की असली दिशा वहीं से तय हुई। अपने महाविद्यालय की यादों को साझा करते हुए उनकी आवाज में आज भी वही उत्साह और आत्मविश्वास झलकता है। आशा पाहुजा बताती हैं कि जब उन्होंने महाविद्यालय में प्रवेश लिया, तब उनके मन में कई तरह की जिज्ञासाएँ और संकोच थे। लेकिन धीरे-धीरे महाविद्यालय का वातावरण उनके लिए एक ऐसा मंच बन गया, जहाँ उन्होंने खुद को पहचाना और अपनी क्षमताओं को निखारा। वे कहती हैं कि महाविद्यालय ने मुझे सिर्फ पढ़ाई नहीं सिखाई, बल्कि यह भी सिखाया कि जीवन में आगे कैसे बढ़ना है और चुनौतियों का सामना कैसे करना है। अपने कॉलेज के दिनों को याद करते हुए वे विशेष रूप से विभिन्न शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का जिक्र करती हैं। उन्होंने कई बार मंच संचालन किया, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और कई आयोजनों में नेतृत्व की भूमिका निभाई। इन अनुभवों ने उनके अंदर आत्मविश्वास पैदा किया, जो आज भी उनके व्यक्तित्व की पहचान है। वे बताती हैं कि उस समय शिक्षकों का मार्गदर्शन उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था। हमारे शिक्षक सिर्फ पढ़ाने तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे हमें जीवन के हर पहलू में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। उनका विश्वास और प्रोत्साहन ही था, जिसने मुझे हर चुनौती को स्वीकार करने की हिम्मत दी, वे कहती हैं। महाविद्यालय के अनुशासन और सकारात्मक वातावरण ने उन्हें समय प्रबंधन और जिम्मेदारी का महत्व सिखाया। यही गुण आगे चलकर उनके पेशेवर जीवन में बेहद उपयोगी साबित हुए। आज एक डायरेक्टर के रूप में वे जिस कुशलता से अपने संस्थान का संचालन करती हैं, उसमें उनके महाविद्यालय की सीख स्पष्ट झलकती है। वे यह भी मानती हैं कि महाविद्यालय जीवन का वह दौर होता है, जहाँ व्यक्ति अपने सपनों को आकार देता है।

'संखी संगम' एलुमनी मीट-2026 को भव्य बनाने के लिए तैयारियां जोरो पर

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय में आगामी 25 अप्रैल को आयोजित होने वाले पूर्व छात्राओं के मिलन समारोह 'संखी संगम' एलुमनी मीट-2026 को लेकर तैयारियां पूरे जोर-शोर से चल रही हैं। ये जानकारी देते हुए एलुमनी एसोसिएशन की महासचिव डॉ. मोहिनी जांगड़ा ने बताया कि इस बहुप्रतीक्षित आयोजन को लेकर पूर्व छात्राओं में भारी उत्साह देखने को मिल रहा है। उन्होंने बताया कि बताया कि सन् 1970 में महाविद्यालय की स्थापना से लेकर अभी तक विभिन्न बैचों की लगभग 5 हजार से भी ज्यादा पूर्व छात्राएं समारोह में भागीदारी की अनुशंसा को लेकर अपना पंजीकरण करवा चुकी है और इसी क्रम में निरंतर रोज नए आवेदन उन्हें प्राप्त हो रहे हैं, जो इस आयोजन की लोकप्रियता और महाविद्यालय के प्रति पूर्व छात्राओं के गहरे जुड़ाव को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि वर्षों बाद अपने कॉलेज परिसर में लौटने को लेकर पूर्व छात्राएं बेहद उत्साहित हैं और कई छात्राओं ने भावुक होकर अपनी पुरानी प्राध्यापिकाओं से मिलने की इच्छा भी व्यक्त की है। इसी को ध्यान में रखते हुए एसोसिएशन द्वारा सेवानिवृत्त प्राध्यापिकाओं को भी विशेष तौर पर बुलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्व छात्राएं हमारे संस्थान की सबसे

आयोजन को लेकर पूर्व छात्राओं में भारी उत्साहः डॉ. मोहिनी

बड़ी प्रेरणा हैं। उनकी उपलब्धियां महाविद्यालय का नाम रोशन करती हैं। यह सम्मेलन हमें उनके अनुभवों, विचारों और सुझावों को समझने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेगा, जिससे वर्तमान छात्राओं को भी मार्गदर्शन मिलेगा। सम्मेलन के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी विशेष रूप से तैयारी की जा रही है।

वर्तमान छात्राओं द्वारा नृत्य, गायन और नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से कार्यक्रम को आकर्षक बनाया जाएगा। वहीं पूर्व छात्राओं को भी अपने कॉलेज जीवन की यादें साझा करने का अवसर मिलेगा, जिससे पूरा माहौल भावनात्मक और यादगार बन जाएगा। इसके अलावा आयोजन में मैत्री खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें वर्तमान और पूर्व छात्राएं एक साथ भाग लेकर आपसी संबंधों को और प्रगाढ़ करेंगी। यह आयोजन न केवल पुरानी यादों को ताजा करेगा, बल्कि नए रिश्तों और नेटवर्किंग के अवसर भी प्रदान करेगा।

आयोजन को सुव्यवस्थित एवं ऐतिहासिक बनाने के लिए कमेटीयों का गठन

डॉ. जागड़ा ने आगे बताया कि इस भव्य आयोजन को सफल बनाने के लिए एसोसिएशन की अध्यक्ष डॉ. रेणू के संयोजन में विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया है। इसके तहत डॉ. सुचेता सोनी को प्रदर्शनी (स्टॉल), डॉ. आशिमा यादव एवं तान्या को संपर्क, डॉ. गायत्री बंसल को प्रचार-प्रसार, डॉ. नेहा को धन संग्रह एवं आवास, डॉ. वैशाली को भोजन व्यवस्था, तथा सीमा को साज-सज्जा (फाईन आर्ट, डॉ. रचना एवं डॉ. तमन्ना को सांस्कृतिक एवं डॉ. ममता चौधरी को मंच संचालन कमेटी की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

महाविद्यालय के स्नेहिल वातावरण ने गढ़ा संवेदनशील व्यक्तित्व

भावना गोयल (प्रिंसिपल, लिटिल हार्ट पब्लिक स्कूल)

जीवन के कुछ पल ऐसे होते हैं, जो समय के साथ बीत जरूर जाते हैं, लेकिन उनकी मिठास हमेशा दिल में बनी रहती है। लिटिल हार्ट पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल भावना गोयल के लिए उनके महाविद्यालय के दिन कुछ ऐसे ही अनमोल और यादगार रहे हैं। भावना गोयल अपने कॉलेज जीवन को याद करते हुए कहती हैं कि वह समय उनके जीवन का सबसे खूबसूरत दौर था। महाविद्यालय मेरे लिए सिर्फ पढ़ाई का स्थान नहीं था, बल्कि यह एक ऐसा परिवार था, जहाँ हर कोई एक-दूसरे का साथ देता था। वे बताती हैं कि महाविद्यालय का माहौल शुरूआत से ही सकारात्मक और प्रेरणादायक था। हमारी प्राध्यापिकाएं न केवल विषयों की गहराई से जानकारी देती थी, बल्कि व्यक्तित्व विकास पर भी विशेष ध्यान देती थी। वे याद करते हुए कहती है कि हमारे शिक्षक हमें समझते थे, हमारी समस्याओं को सुनते थे और हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन करते थे। महाविद्यालय के दिनों की सबसे खास बात उनके लिए सखियों के साथ बिताए गए पल हैं। वे कहती हैं कि क्लास के बाद साथ बैठकर पढ़ाई करना, लाइब्रेरी में समय बिताना और कभी-कभी हँसी-मजाक करना। ये सभी पल आज भी दिल को सुकून देते हैं। परीक्षा के दिनों का जिक्र करते हुए वे बताती हैं कि कैसे सभी दोस्त एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते थे और मिलकर तैयारी करते थे। वे मुस्कुराते हुए कहती है कि उस समय का साथ और सहयोग आज भी मेरी सबसे बड़ी ताकत है। भावना गोयल मानती हैं कि महाविद्यालय ने उन्हें न केवल एक अच्छी छात्रा बनाया, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार इंसान भी बनाया। आज एक प्रिंसिपल के रूप में वे अपने विद्यार्थियों के साथ वही व्यवहार करती हैं, जो उन्होंने अपने शिक्षकों से सीखा। आज के विद्यार्थियों को संदेश देते हुए वे कहती है कि अपने कॉलेज जीवन को पूरी तरह से जीएं। यह समय दोबारा नहीं आता, इसलिए हर पल को संजोकर रखें और उससे कुछ नया सीखें। महाविद्यालय की यादें आज भी उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, जो उन्हें हर दिन प्रेरित करती हैं।

सादगी भरे महाविद्यालय की यादें आज भी देती हैं सुकून

उषा संजय कौशिक

जीवन की भागदौड़ और जिम्मेदारियों के बीच कुछ यादें ऐसी होती हैं, जो मन को सुकून देती हैं और चेहरे पर मुस्कान ले आती हैं। एक गृहिणी के रूप में अपने परिवार की जिम्मेदारियों को निभा रही इस महिला के लिए उनके महाविद्यालय के दिन ऐसी ही मीठी यादों से भरे हुए हैं। मेरा कॉलेज जीवन बहुत ही सरल और खुशहाल था। उस समय जीवन में ज्यादा जिम्मेदारियाँ नहीं थीं, बस पढ़ाई और दोस्तों के साथ बिताए हुए पल ही सबसे खास थे। महाविद्यालय का वातावरण मेरे लिए एक नई दुनिया जैसा था, जहाँ मैंने कई नई सहेलियां बनाई और जीवन के नए अनुभव प्राप्त किए। क्लास के बाद कैंपस में घूमना, सहेलियों के साथ बातें करना और छोटी-छोटी खुशियों को साझा करना, ये सब आज भी बहुत याद आता है। महाविद्यालय ने मुझें आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। वहाँ हमने सीखा कि कैसे अपने फैसले खुद लेने हैं और जीवन में संतुलन बनाए रखना है। आज जब मैं अपने परिवार की जिम्मेदारियों में व्यस्त हूं, तब अपने कॉलेज के दिन और भी ज्यादा याद आते हैं। अब समझ आता है कि वो समय कितना अनमोल था। उस

समय की बेफिक्री और खुशी आज के जीवन में बहुत कम मिलती है। महाविद्यालय ने उन्हें एक मजबूत आधार दिया, जिसकी वजह से वे आज अपने जीवन को बेहतर तरीके से संभाल पा रही हैं। वहाँ सीखी गई बातें आज भी मेरे हर निर्णय में झलकती हैं। कॉलेज में बिताया समय जीवन के सबसे सुंदर दौर में से एक था। आज भले ही समय बीत गया हो, लेकिन उनके महाविद्यालय की यादें आज भी मेरे दिल के बहुत करीब हैं और उन्हें हर दिन मुस्कुराने की वजह देती हैं।

जॉब इंटरव्यू की तैयारी... इंटरव्यू का डर नहीं तैयारी जरूरी

आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में एक अच्छी नौकरी पाना केवल डिग्री पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप इंटरव्यू में खुद को कितनी प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करते हैं। जॉब इंटरव्यू केवल प्रश्नों के उत्तर देने का माध्यम नहीं, बल्कि यह आपके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और सोचने की क्षमता का पूरा आकलन होता है। इंटरव्यू की तैयारी का पहला कदम है कंपनी और पद के बारे में पूरी जानकारी जुटाना। जिस संस्था में आप आवेदन कर रहे हैं, उसके कार्यक्षेत्र, उपलब्धियों और अपेक्षाओं को समझना बेहद जरूरी है। इससे न केवल आपके उत्तर बेहतर बनते हैं, बल्कि इंटरव्यू लेने वाले पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है अपने विषय और स्किल्स की स्पष्ट समझ। आपसे आपके शैक्षणिक विषय, अनुभव और कौशल से जुड़े प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि आप अपने रिज्यूमे में लिखी हर बात को अच्छे से समझें और उसे आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत कर सकें। मॉक इंटरव्यू (प्रैक्टिस इंटरव्यू) भी तैयारी का अहम हिस्सा है। इससे आप अपनी कमियों को पहचान सकते हैं और उन्हें सुधार सकते हैं। दोस्तों या शिक्षकों के साथ अभ्यास करने से आत्मविश्वास बढ़ता है और घबराहट कम होती है। इंटरव्यू में आपकी बॉडी लैंग्वेज भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितना कि आपका ज्ञान।

सही तरीके से बैठना, आँखों में संपर्क बनाए रखना और मुस्कुराते हुए बात करना ये सभी छोटी-छोटी बातें आपके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाती हैं। समय की पाबंदी भी सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक है। इंटरव्यू के लिए समय पर पहुँचना आपके

अनुशासन और गंभीरता को दर्शाता है। साथ ही, आपका पहनावा (ड्रेसिंग सेंस) भी सादा, सुसज्जित और प्रोफेशनल होना चाहिए। सबसे जरूरी बात आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि किसी प्रश्न का उत्तर आपको नहीं आता, तो घबराने की बजाय ईमानदारी से स्वीकार करें। यह आपके व्यक्तित्व की सकारात्मकता को दर्शाता है। अंत में, यह याद रखें कि इंटरव्यू केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं, बल्कि सीखने का एक अवसर भी है। हर इंटरव्यू आपको कुछ नया सिखाता है और आगे के लिए बेहतर बनाता है। इसलिए, सही तैयारी, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास के साथ इंटरव्यू का सामना करें सफलता निश्चित रूप से आपके कदम चूमेगी।

अनमोल सपने

सपना एक छोटा सा शब्द है,
लेकिन इस छोटे से शब्द में
सिमटी हुई है पूरी दुनिया मेरी।
लोग कहते है सपना ही तो है!
क्या बताऊ उन लोगों को
ये सिर्फ सपना नहीं जान है मेरी।
ये सपने ही तो है, जो रात भर
सोने नहीं देते,
ये सपने ही तो है,
जो हारने पर भी हार मानने नहीं
देते,
ये सपने ही तो है, जो खुद को
खोकर भी,
खुद को पाने के लिए मजबूर करते है,
ये सपने ही तो है, जो मुझे हालातों से लड़ने पर भी मजबूर करते हैं।
माना सपनों को पाना आसान नहीं, लेकिन जो खुद से और
हालातों से लड़कर भी इन्हें पाले,
उससे खुश किस्मत इस दुनिया में कोई और इंसान नहीं
सपनों को पाना, मतलब खुद को पाना,
सपनों को भूलना, मतलब खुद को भूलना।।

– वंशिका बंसल, बी.कॉम प्रथम वर्ष

Educational Trip to Kurukshetra Enriches Students with Knowledge and Experience

The Commerce Department of Adarsh Mahila Mahavidyalaya organized an educational trip to Kurukshetra under the guidance of faculty members, aiming to provide students with practical exposure along with classroom learning. During the visit, the students explored Kurukshetra University, where they gained valuable insights into the academic environment and higher education opportunities. They also visited prominent historical and educational sites including Brahma Sarovar and Shri Krishna Museum. As part of the trip, the students paid a visit to Maa Bhadrakali Temple, where they experienced a sense of spiritual enrichment. The educational tour proved to be highly informative and inspiring, contributing to the academic as well as cultural development of the students. Dr. Gaytri Bansal, Dr. Preeti Sharma, and Mr. Hunny accompanied the students during the trip.

‘अध्यात्म और छात्र जीवन’ विषय पर विचार गोष्ठी

हिंदी विभाग द्वारा ‘अध्यात्म और छात्र जीवन’ विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल की शुभकामनाओं के साथ हुआ, जबकि मंच संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकांत शर्मा ने किया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता अंग्रेजी विभाग की अध्यक्ष डॉ. अपर्णा बत्रा रहीं। उन्होंने अपने संबोधन में अध्यात्म को आत्मज्ञान एवं आंतरिक शक्तियों की पहचान बताते हुए छात्र जीवन में इसके महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अध्यात्म विद्यार्थियों में मानसिक शांति, एकाग्रता, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक सोच का विकास करता है तथा तनाव को कम करने में सहायक होता है। कार्यक्रम के अंत में डॉ. रमाकांत शर्मा ने मुख्य वक्ता का आभार व्यक्त करते हुए उनके विचारों को अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायक बताया।

महाविद्यालय की छात्रा खुशी ने राष्ट्रीय योगासन लीग में जीता कांस्य पदक

प्रतिभाशाली छात्रा कुमारी खुशी ने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा और कठिन परिश्रम के बल पर अस्मिता अखिल भारतीय राष्ट्रीय योगासन लीग प्रतियोगिता में कांस्य पदक हासिल कर महाविद्यालय एवं क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया है। यह प्रतियोगिता युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा 29 से 31 मार्च 2026 तक नई दिल्ली में आयोजित की गई, जिसमें देशभर के विभिन्न राज्यों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। कुमारी खुशी ने प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया। महाविद्यालय प्रबंधन समिती महासचिव अशोक बुवानीवाला एवं प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने खुशी की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसे हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सफलता महाविद्यालय के लिए गर्व का विषय है तथा अन्य छात्राओं के लिए प्रेरणादायक है कि वे योग एवं खेलकूद गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाएं। इस अवसर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग की समन्वयक डॉ. मोनिका राठी, प्राध्यापिका नेहा एवं कंचन दीक्षित ने भी खुशी को इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर शुभकामनाएं दीं।

नारी शक्ति राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह 2026 का धूमधाम से आयोजन

आदर्श महिला महाविद्यालय में वूमन सेल एवं अखिल भारतीय ह्यूमन राइट्स ऑर्गेनाइजेशन के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2026 के उपलक्ष्य में नारी शक्ति राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आदर्श महिला महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के महासचिव श्री अशोक बुवानीवाला ने कहा कि 33ः महिला आरक्षण केवल संवैधानिक व्यवस्था ही नहीं, बल्कि देश में वास्तविक लोकतांत्रिक भागीदारी को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से ही लोकतंत्र और अधिक मजबूत व समावेशी बन सकता है। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम नारी शक्ति, उनके साहस, समर्पण और उपलब्धियों को सम्मानित करने का एक प्रेरणादायी मंच है। कार्यक्रम की सफलता में संयोजिका डॉ. निशा रानी, डॉ. ममता चैधरी, आयोजन समिति सदस्य प्राध्यापिका नैंसी तथा अन्य स्टाफ सदस्यों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

Career Guidance and Placement Cell Organizes Insightful Career Talk on Banking Sector

The Career Guidance and Placement Cell of Adarsh Mahila Mahavidyalaya organized an informative Career Insight Talk at the college, featuring Ms. Heena, a distinguished alumna of the 2018 batch, who is currently serving as an Assistant Manager at PNB Bank, Rohtak. During the session, Ms. Heena shared her valuable experiences and in-depth insights into the banking sector. She highlighted various career opportunities, achievements and the essential skills required to succeed in this field. She also guided the students on effective preparation strategies for banking jobs and emphasized the qualities needed to excel in the profession. The interactive session proved to be highly engaging and informative, motivating students to explore promising career opportunities in the banking sector. The program was organized under the guidance of Convenor Dr. Gaytri Bansal, with the support of members Ms. Sheetal and Dr. Preeti Sharma.

नशा विरोधी जागरूकता हेतु इंट्रा-कॉलेज प्रतियोगिता

नशा विरोधी जागरूकता सेल द्वारा कॉलेज परिसर में नशीली दवाओं के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से इंट्रा-कॉलेज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के सानिध्य में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के अंतर्गत स्लोगन लेखन, भाषण प्रतियोगिता एवं पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने पूरे उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। इस प्रतियोगिता में लगभग 40 छात्राओं ने भागीदारी करते हुए नशा विरोधी संदेश देने वाले रचनात्मक नारों एवं प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली 3 पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन, 3 स्लोगन लेखन तथा 2 भाषण प्रतियोगिता की प्रतिभागियों को योग्यता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अंत में प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों को बधाई देते हुए छात्राओं को ऐसे आयोजनों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। उन्होंने समाज में नशीली दवाओं के दुरुपयोग के प्रति जागरूकता फैलाने के महत्व पर विशेष जोर दिया तथा इस सार्थक आयोजन के लिए नशा विरोधी जागरूकता सेल के प्रयासों की सराहना की। इस कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. दीपू सैनी (नोडल अधिकारी, तंबाकू विरोधी प्रकोष्ठ), डॉ. ममता वाधवा, सीमा एवं डॉ. रीतिका के मार्गदर्शन में किया गया।

आदर्श महिला महाविद्यालय में पीटीएम का आयोजन

शिक्षा के साथ छात्राओं के व्यवहार, स्वास्थ्य और कैरियर पर हुआ सार्थक संवाद

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय में आयोजित अभिभावक-शिक्षक बैठक (पीटीएम) ने इस बार एक नई सोच और व्यापक दृष्टिकोण के साथ सभी का ध्यान आकर्षित किया। प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के मार्गदर्शन में आयोजित इस पीटीएम में बड़ी संख्या में अभिभावकों की सहभागिता देखने को मिली। बैठक के दौरान केवल शिक्षा तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के समग्र विकास पर गहन चर्चा की गई। शिक्षकों ने अभिभावकों को प्रत्येक छात्रा की शैक्षणिक प्रगति, उसकी रुचियों, क्षमताओं और सुधार की संभावनाओं के बारे में विस्तार से अवगत कराया। साथ ही, बदलते समय की मांग के अनुरूप विभिन्न कैरियर विकल्पों और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की तैयारी को लेकर भी उपयोगी मार्गदर्शन दिया गया। पीटीएम में विशेष रूप से छात्राओं के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, व्यवहार, अनुशासन, भावनात्मक संतुलन को लेकर भी गंभीरता से विचार-विमर्श किया गया ताकि छात्राएं आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकें। पीटीएम के सफल आयोजन को लेकर प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने सभी शिक्षण स्टाफ को बधाई देते हुए कहा कि पीटीएम केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव है। शिक्षकों और अभिभावकों के सामूहिक प्रयास से ही छात्राओं का व्यक्तित्व निखरता है और वे जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकती हैं। कार्यक्रम के अंत में अभिभावकों ने महाविद्यालय की इस पहल को सराहनीय बताते हुए कहा कि इससे उन्हें बच्चों की प्रगति की सही जानकारी मिली है, जिससे वे अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में और अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकेंगे।

जब सहेली बन जाए प्रतिस्पर्धी: प्रेरणा, प्रगति और रिश्तों की नई परिभाषा

जीवन में दोस्ती और प्रतिस्पर्धा दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन जब यही दोनों एक साथ मिल जाते हैं, तो एक नई कहानी जन्म लेती है 'जब सहेली बन जाए प्रतिस्पर्धी।' यह स्थिति जितनी चुनौतीपूर्ण होती है, उतनी ही भावुक और प्रेरणादायक भी। महाविद्यालय या किसी भी शैक्षणिक वातावरण में अक्सर ऐसा देखने को मिलता है कि जो सहेलियाँ साथ बैठकर पढ़ती हैं, एक-दूसरे की मदद करती हैं, एक-दुसरे की सहयोगी बनती है, साथ मिलकर भविष्य के सपने बुनती है, वही एक समय पर एक-दूसरे की प्रतिस्पर्धी बन जाती हैं। पहली नजर में यह स्थिति थोड़ी असहज लग सकती है, लेकिन यदि इसे सकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यही प्रतिस्पर्धा सफलता का सबसे बड़ा कारण बन सकती है। जब सहेली प्रतिस्पर्धी बनती है, तो पढ़ाई में एक नई ऊर्जा आ जाती है। दोनों एक-दूसरे से बेहतर करने की कोशिश करती हैं, जिससे मेहनत का स्तर बढ़ता है और परिणाम भी बेहतर होते हैं। यह प्रतिस्पर्धा केवल अंक प्राप्त करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति गंभीरता को भी मजबूत करती है। हालांकि, इस दौरान यह जरूरी है कि प्रतिस्पर्धा स्वस्थ बनी रहे। यदि इसमें ईर्ष्या या नकारात्मकता आ जाए, तो यह दोस्ती को नुकसान पहुँचा सकती है। लेकिन अगर दोनों सहेलियाँ एक-दूसरे की सफलता को प्रेरणा के रूप में लें, तो यह रिश्ता और भी

मजबूत हो जाता है। सच्ची दोस्त वही होती है, जो आपके साथ-साथ आगे बढ़ने की इच्छा रखे, न कि आपको पीछे छोड़ने की। ऐसी प्रतिस्पर्धा हमें जीवन के बड़े पाठ भी सिखाती है जैसे कि हार को स्वीकार करना, जीत में विनम्र रहना और हर परिस्थिति में खुद को बेहतर बनाने का प्रयास करना। आगे चलकर यही अनुभव हमें पेशेवर जीवन में भी मदद करते हैं, जहाँ हर कदम पर प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। अंततः 'जब सहेली बन जाए प्रतिस्पर्धी' केवल एक स्थिति नहीं, बल्कि एक अवसर है खुद को पहचानने, अपनी सीमाओं को पार करने और रिश्तों को एक नए स्तर पर समझने का।

Mathematics Department Organizes Descriptive Writing Competition

The Department of Mathematics at Adarsh Mahila Mahavidyalaya organized a Descriptive Writing Competition on the topic "Biographical and Analytical Study of Eminent Mathematicians." The competition witnessed enthusiastic participation from students of PG Previous and Final Year, who demonstrated their writing skills along with a deep understanding of the lives and contributions of renowned mathematicians. After careful evaluation, the results were declared as follows: Raman secured the first position, Aarti stood second, Parul achieved third position, while Madhu received the consolation prize. The event was graced by the respected Principal, who distributed certificates to the winners and appreciated all participants for their sincere efforts. She encouraged students to continue developing both analytical and creative abilities. The competition proved to be an enriching experience and successfully fostered greater interest in mathematics beyond the classroom.

महिला आरक्षण विशेष

आधी आबादी, पूरा हक

देश की राजनीति में एक ऐतिहासिक बदलाव की ओर बढ़ते हुए महिला आरक्षण का मुद्दा फिर से केंद्र में है। 'आधी आबादी, पूरा हक' की भावना के साथ लंबे समय से उठ रही मांग अब साकार होती दिखाई दे रही है। यह केवल एक विधायी बदलाव नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। भारत की कुल जनसंख्या में महिलाओं की भागीदारी लगभग 50 प्रतिशत है, लेकिन राजनीतिक प्रतिनिधित्व के मामले में यह संख्या हमेशा से बहुत कम रही है। संसद और विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी सीमित होने के कारण उनके मुद्दों को पर्याप्त प्राथमिकता नहीं मिल पाती थी। ऐसे में महिला आरक्षण कानून महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी का अवसर प्रदान करेगा। इस प्रस्ताव के तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने का प्रावधान किया गया है।

इसके लागू होने के बाद न केवल महिलाओं की संख्या बढ़ेगी, बल्कि नीति निर्माण में भी उनकी सक्रिय भूमिका देखने को मिलेगी। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और रोजगार जैसे मुद्दों पर अधिक संवेदनशील और प्रभावी निर्णय लिए जा सकेंगे। हालांकि, इस कानून के लागू होने से पहले परिसीमन प्रक्रिया पूरी होना आवश्यक है। 2011 की जनगणना के आधार पर सीटों का पुनर्निर्धारण किया जाएगा, जिसके बाद ही महिला आरक्षण पूरी तरह प्रभावी हो सकेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि यह प्रक्रिया देश की राजनीतिक संरचना को नए सिरे से परिभाषित करेगी। महिला आरक्षण को लेकर समाज में व्यापक समर्थन देखने को मिल रहा है। विभिन्न सामाजिक संगठनों, शिक्षाविदों और महिला समूहों ने इसे ऐतिहासिक कदम बताते हुए स्वागत किया है। उनका मानना है कि इससे न केवल महिलाओं को अधिकार मिलेगा, बल्कि समाज में लैंगिक समानता को भी मजबूती मिलेगी। दूसरी ओर, कुछ राजनीतिक दल और नेता इसे लेकर अपनी चिंताएं भी जता रहे हैं। उनका कहना है कि सीटों के पुनर्गठन और आरक्षण से मौजूदा राजनीतिक समीकरणों में बड़ा बदलाव आएगा। लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि यह बदलाव लोकतंत्र को और मजबूत बनाएगा, क्योंकि इससे प्रतिनिधित्व अधिक संतुलित और समावेशी होगा। ग्रामीण और शहरी स्तर पर भी महिला नेतृत्व के कई सकारात्मक उदाहरण सामने आए हैं। पंचायतों और नगर निकायों में आरक्षण के बाद महिलाओं ने प्रशासनिक क्षमता, पारदर्शिता और विकास कार्यों में अपनी प्रभावी भूमिका साबित की है। यही अनुभव अब बड़े स्तर पर भी देखने को मिल सकता है। महिला आरक्षण केवल एक कानून नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक सशक्त माध्यम है। यह उन लाखों महिलाओं के सपनों को पंख देगा, जो अब तक राजनीति से दूर थीं। इससे आने वाले समय में देश को अधिक संवेदनशील, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील नेतृत्व मिलने की उम्मीद है।

Extension Lecture on New Trends in Music

The Department of Music at Adarsh Mahila Mahavidyalaya successfully organized an extension lecture on the topic "New Trends in Music." The session was delivered by Dr. Savita, Assistant Professor from Rajiv Gandhi Mahavidyalaya, as the keynote speaker. During her lecture, Dr. Savita shared valuable insights into the subject of music and elaborated on effective strategies to score higher marks in both practical and written examinations. She guided the students on presenting their answers in a structured and impactful manner during exams.

She also highlighted various career opportunities in the field of music and provided meaningful guidance to help students plan their future growth and success. The session proved to be highly informative and beneficial for the students, enhancing their academic understanding as well as career awareness in the field of music.

आदर्श महिला महाविद्यालय में एआई के महत्व पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

एआई केवल तकनीकी क्षेत्र तक सीमित नहीं : आईआरएस सुरेन्द्र पाल

भिवानी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आज केवल तकनीकी क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनती जा रही है। ये उद्गार आज आदर्श महिला महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग द्वारा भविष्य और आने वाली पीढ़ियों के लिए तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का महत्व पर आयोजित एक विशेष व्याख्यान के दौरान मुख्य वक्ता आईआरएस अधिकारी एवं आयकर विभाग गुरुग्राम के प्रधान मुख्य आयुक्त सुरेंद्र पाल ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहें। उन्होंने बताया कि आज एआई तकनीकें हमारी रसोई से लेकर युद्ध के मैदान तक विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य, शिक्षा, बैंकिंग और व्यापार जैसे क्षेत्रों में भी एआई का तेजी से विस्तार हो रहा है। अस्पतालों में एआई आधारित मशीनें बीमारियों का प्रारंभिक पता लगाने में मदद कर रही हैं, वहीं शिक्षा के क्षेत्र में यह छात्रों के लिए व्यक्तिगत सीखने के नए अवसर प्रदान कर रही है। श्री पाल ने युद्ध और सुरक्षा के क्षेत्र में एआई के बढ़ते महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आज आधुनिक सेनाएं ड्रोन, स्वचालित हथियार प्रणाली, निगरानी प्रणाली और साइबर सुरक्षा में एआई का उपयोग कर रही हैं।

उन्होंने छात्राओं का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि आने वाला समय डिजिटल और तकनीकी दक्षता का है, इसलिए युवाओं को नई तकनीकों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। उन्होंने विशेष रूप से छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि वे एआई जैसी तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में आगे बढ़ें और देश के विकास में अपना योगदान दें। उन्होंने छात्राओं को किताबें पढ़ने पर भी जोर दिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति सुरेश गुप्ता द्वारा की गई। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल द्वारा महाविद्यालय परिवार की ओर से मुख्य वक्ता का आभार व्यक्त किया गया। इस मौके पर वरिष्ठ अधिवक्ता एवं वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरत्न गुप्ता, महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति की उपाध्यक्ष सुनीता गुप्ता, कोषाध्यक्ष सुंदरलाल अग्रवाल, संयुक्त सचिव पवन केडिया, वाणिज्य विभागाध्यक्ष नीरू चावला उपस्थित रही।

आधुनिक नारी की लाइफस्टाइल: संतुलन, आत्मविश्वास और खुद से जुड़ाव

आज की महिला सिर्फ घर तक सीमित नहीं है, बल्कि वह हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। करियर, परिवार, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत खुशी–इन सभी को संतुलित करना आसान नहीं, लेकिन आधुनिक नारी इस चुनौती को बखूबी निभा रही है। उसकी लाइफस्टाइल अब सिर्फ दिखावे तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, मानसिक शांति और खुद से जुड़ाव पर आधारित हो गई है। आधुनिक महिला की लाइफस्टाइल सिर्फ बाहरी चमक-दमक नहीं, बल्कि एक संतुलित और जागरूक जीवनशैली का प्रतीक है। जब वह खुद का ख्याल रखती है, तो वह अपने आसपास के लोगों के जीवन को भी बेहतर बना सकती है।

खुद के लिए समय निकालना जरूरी: व्यस्त दिनचर्या में महिलाएं अक्सर अपनी जरूरतों को पीछे छोड़ देती हैं। लेकिन अब यह समझ बढ़ रही है कि 'मी टाइम' कोई लग्जरी नहीं, बल्कि जरूरत है। चाहे वह किताब पढ़ना हो, संगीत सुनना हो या सिर्फ कुछ देर अकेले बैठना–ये छोटे पल मानसिक सुकून देते हैं।

फिटनेस: केवल शरीर नहीं, मन के लिए भी फिट रहना अब सिर्फ स्लिम दिखने तक सीमित नहीं है। योग, वॉक, डांस या जिम–कोई भी गतिविधि न केवल शरीर को स्वस्थ रखती है, बल्कि तनाव को भी कम करती है। मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना आज की लाइफस्टाइल का अहम हिस्सा बन चुका है।

संतुलित आहार का महत्व: स्वस्थ जीवन के लिए सही खानपान जरूरी है। महिलाएं अब जंक फूड से दूरी बनाकर घर के बने पौष्टिक भोजन की ओर ध्यान दे रही हैं। हरी सब्जियां, फल, और पर्याप्त पानी–ये छोटी आदतें बड़ी सेहत देती हैं।

सौंदर्य का नया अर्थ: आज सुंदरता का मतलब केवल बाहरी रूप नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच भी है। स्किन केयर और ग्रूमिंग जरूरी है, लेकिन उससे ज्यादा जरूरी है खुद को स्वीकार करना और अपने व्यक्तित्व को निखारना।

करियर और आत्मनिर्भरता: आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना आज की महिला की सबसे बड़ी ताकत है। वह अपने फैसले खुद लेने लगी है और अपने सपनों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ रही है। यही आत्मनिर्भरता उसकी लाइफस्टाइल को और मजबूत बनाती है।

रिश्तों में संतुलन: परिवार और रिश्ते महिलाओं के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। लेकिन अब महिलाएं यह समझने लगी हैं कि खुद की खुशी भी उतनी ही जरूरी है। स्वस्थ रिश्ते वही हैं, जहां सम्मान और समझ दोनों हों।

डिजिटल लाइफ का संतुलन: सोशल मीडिया और डिजिटल दुनिया का प्रभाव हर किसी की जिंदगी पर है। लेकिन स्मार्ट महिला वही है जो इसका उपयोग समझदारी से करे और जरूरत पडने पर इससे दूरी भी बना सके।

'नारी सशक्तिकरण'

'यात्र नार्यस्तु पूज्यन्ते ...
रमन्ते तत्र देवता'

आजकल जब चर्चा होती है शक्तिस्वरूपा या नारी सशक्तिकरण की तब लोग कहते हैं कि नारी को सशक्त होने के लिए केवल शिक्षा ,सामानता की जरुरत है लेकिन सिर्फ इतना ही काफी नहीं है। नारी को सशक्त होने के लिए शिक्षा, समानता के साथ -साथ ,आत्मनिर्भरता, अपने निर्णय स्वयं लेने की क्षमता ,आगे बढ़ने के समाने अवसर व एक शिक्षित व सभ्य समाज होना चाहिए। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनना होगा,अपने निर्णय स्वयं लेने होंगे।इसके लिए जरूरी है कि महिलाएं शारीरिक वे मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत हो। प्राचीन समय से ही हमारी संस्कृति में नारी को पूज्य माना जाता है। वेदों के अनुसार जो कुछ भी शुभ है,सुंदर है, कल्याणकारी है, उन सब की रचना नारी रुप में की गई है। परंतु आज का मनुष्य नारी को केवल एक अबला के रुप में देखता है।वह ये नहीं जानता कि जिस दिन इस देश की नारी अपनी शक्ति को पहचानकर, एकजुट होकर चल पडेगी, उस दिन उसकी शक्ति को रोक पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन होगा। अब इस देश की नारी को द्रोपदी बनकर श्री कृष्ण को अपनी रक्षा के लिए नहीं पुकारना, बल्कि स्वयं ही दुर्गा बनकर अपने शत्रुओ का संहार करना होगा।पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य÷ लोगों को जगाने के लिए, महिलाओं का जागृत होना जरूरी है।÷ एक बार जब वह अपना कदम उठा लेती हैं तो पूरा परिवार आगे बढ़ता है ,गांव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुक्त होता है । भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्य को दबा देने वाली उस सोच को समाप्त करना जरूरी होगा। जो महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकती हैं।जैसे लोगो का यह कहना कि महिलाएँ पढकर क्यो करेंगी। उन्हे तो बस घर का चूल्हा-चौका देखना है।ऐसी रूढिवादी सोच से देश की संस्कृति और विकास मेंअंतर आता है जो देश को पीछे की ओर धकेलता है। उन्हें यह समझना चाहिए कि जो महिला बेलन चला सकती है वह सरकार भी चला सकती है। भारत के संविधान में उल्लेखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है। हर क्षेत्र में महिलाओं को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महिलाओं का आगे बढ़ना आवश्यक है। जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए भी उपयोगी है।

सरोजिनी नायडू जी ने कहा था कि 'एक देश की स्थिति वहां रहने वाली महिलाओं की स्थिति से मालूम पड़ती है÷।आज नारी धरती की गहराईयों से आसमान की उचाईयों तक पहुँच चुकी है। लेकिन विडम्बना देखिये कि धरती की सीमाओं को लांघकर, आकाश की बुलंदियों को छू लेने वाली *कल्पना चावला* के इस देश में आज नारी घर की चौखट लांघने में भी झिझकती है।डर लगता है उसे घात लगाए बैठे रावण और दु:शासन से,उसे डर लगता है जुए की बाजी पर सौदा करने वाले धर्मराजों से, डर लगता है उसकी पवित्रता पर सवाल उठाने वाले धर्म के ठेकेदारों से।आज महिलाओं ,बेटियों के खून से भीगे अखबार डस बात की गवाही देते हैं कि समाज के लिए महिला सशक्तिकरण मात्र एक दिखावा है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिए व महिलाओं के खिलाफ होने वाले अत्याचार को रोकने के लिए सरकार कई सारे कदम उठा रही है। महिलाओं को आरक्षण देने की बात करने वाली सरकार को समाज को भी उसकी रूढ़िवादी सोच से ऊपर उठाने के प्रयास भी करने होंगे।

'ना शिक्षा, ना नौकरी, ना
राजनीति के संदर्भ में,
नारी को यदि आरक्षण देना है,
तो दीजिये माँ के गर्भ में..'

इस देश की नारी 33प्रतिशत आरक्षण से पहले माँ के गर्भ से जन्म लेने का अधिकार मांगती है,इज्जत और सम्मान से जीने का हक मांगती है। यदि ऐसा हो गया तो आरक्षण की जरूरत ही नहीं रह जाएगी। आज समाज में बड़ी बड़ी बातें करने का नहीं बल्कि छोटी छोटी पहल करने का समय है।आज देश में महिलाओं को स्वयं के लिए जागरूक होने की आवश्यकता है।देश में महिलाओं के प्रति सम्मान व महिला सशक्तिकरण के लिए सबको आगे आना होगा। सभी को मिलकर आवाज उठानी होगी तभी हमारा भारत एक सशक्त भारत बने पाएगा।

'आओ प्रण लो मेरे साथ,
मिलकर ये आह्वान करो,
देश भी उज्जवल हो जाएगा,
सब नारी का सम्मान करो।'

महिलाओं से जुड़ें संवेदनशील मुद्दों पर बनी कहानियां और समाज की असहजता

हाल ही में आई वेबसीरीज चिड़िया हो या थप्पड़ और शी जैसी फिल्में, इन सभी में महिलाओं से जुड़े ऐसे पहलुओं को सामने लाने की कोशिश की गई है, जिन पर अक्सर समाज चुप्पी साध लेता है। ये कहानियां सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक ढांचे और सोच पर सवाल उठाने का साहस करती हैं। लेकिन सवाल यह है कि जब ये मुद्दे हमारे आसपास मौजूद हैं, तो फिर समाज इन्हें स्वीकार करने में झिझक क्यों दिखाता है? जब भी किसी फिल्म या वेबसीरीज में घरेलू हिंसा, लैंगिक भेदभाव, या मानसिक उत्पीडऩ जैसे विषयों को दिखाया जाता है, तो एक वर्ग इसे अतिशयोक्ति या अनावश्यक बताकर खारिज कर देता है। दरअसल, यह अस्वीकार्यता कहीं न कहीं उस सच्चाई से बचने की कोशिश है, जिसे स्वीकार करना आसान नहीं होता। समाज अक्सर उन बातों को नजरअंदाज करना चाहता है, जो उसकी स्थापित धारणाओं को चुनौती देती हैं।

महिलाओं की आवाज और सामाजिक सोच

महिलाओं से जुड़े मुद्दे आज भी कई जगहों पर परिवार की इज्जत या परंपरा के नाम पर दबा दिए जाते हैं। जब फिल्मों में कोई महिला अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाती है, तो उसे विद्रोह या अत्यधिक आधुनिकता का नाम दे दिया जाता है। यह सोच दर्शाती है कि हम आज भी महिलाओं की स्वतंत्रता को पूरी तरह स्वीकार नहीं कर पाए हैं। सिनेमा और वेबसीरीज समाज का आईना होते हैं। वे वही दिखाते हैं जो कहीं न कहीं हमारे आसपास हो रहा है। थप्पड़ जैसी फिल्म ने यह सवाल उठाया कि क्या एक थप्पड़ भी रिश्ते में स्वीकार्य होना चाहिए? वहीं शी ने महिलाओं की जटिल परिस्थितियों और उनकी मानसिक स्थिति को उजागर किया। ये कहानियां हमें सोचने पर मजबूर करती हैं, लेकिन शायद यही असहजता का कारण भी बनती हैं। समाज में बदलाव एक धीमी प्रक्रिया है। वर्षों से चली आ रही मान्यताएं और पितृसत्तात्मक सोच इतनी गहराई से जड़ें जमा चुकी हैं कि उन्हें बदलना आसान नहीं है। जब कोई रचना इन मान्यताओं को चुनौती देती है, तो विरोध स्वाभाविक हो जाता है। जरूरत इस बात की है कि हम इन कहानियों को केवल मनोरंजन के रूप में न देखें, बल्कि एक संदेश के रूप में समझें। महिलाओं से जुड़े मुद्दों को स्वीकार करना और उन पर खुलकर चर्चा करना ही समाज को आगे बढ़ा सकता है। आज का सिनेमा केवल कहानियां नहीं सुना रहा, बल्कि समाज को आईना दिखा रहा है। अगर हम सच को स्वीकार करने की हिम्मत जुटा लें, तो यही कहानियां बदलाव की शुरुआत बन सकती हैं। आखिरकार, एक बेहतर समाज वही है, जहां हर आवाज को सुना और समझा जाए।

सुडोकू पजल

नियम: नीचे दिए गए 9 ग्रिड में खाली स्थानों को 1 से 9 तक के अंकों से भरें।

ध्यान रखें-
- ▸▸हर पंक्ति में 1 से 9 तक सभी अंक एक-एक बार हों।
- ▸▸हर कॉलम में 1 से 9 तक सभी अंक एक-एक बार हों।
- ▸▸हर बॉक्स में 1 से 9 तक सभी अंक एक-एक बार हों।

		1				2		
	3						4	
5				3				6
			1		7			
	4						8	
			9		2			
3								8
	6			5			3	
		2				7		

जयपुर व सांगानेर शैक्षणिक का भ्रमण

छात्राओं ने वस्त्र निमार्ण के हुनर को समझा

गृह विज्ञान विभाग द्वारा 27 एवं 28 मार्च, 2026 को जयपुर (बगरू एवं सांगानेर) का दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। यह भ्रमण महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ, जिसमें 23 छात्राओं ने भाग लिया। भ्रमण के दौरान छात्राओं ने श्री कृष्णा टेक्सटाइल्स, सांगानेर, दोसाया टेक्सटाइल (पारंपरिक क्राफ्ट, बगरू) तथा राजस्थान टेक्सटाइल डेवलपमेंट को-ऑपरेशन, जयपुर में विभिन्न प्रकार के पारंपरिक वस्त्रों एवं प्रिंटिंग तकनीकों का अध्ययन किया। छात्राओं ने स्क्रीन प्रिंटिंग, बगरू ब्लॉक प्रिंट, डाबू प्रिंट, टाई एंड डाई साड़ियां, सूट, दुपट्टे, रजाई, बेडशीट्स एवं कालीनों के निर्माण की प्रक्रिया को नजदीक से देखा और समझा। इसके अतिरिक्त छात्राओं ने गुड़, लोहा, मजीठा लकड़ी, गोंद एवं

मुल्तानी मिट्टी से तैयार किए जाने वाले प्राकृतिक रंगों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। साथ ही प्राचीन काल में उपयोग किए जाने वाले वस्त्रों एवं आभूषणों का अवलोकन कर उनके बारे में महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की।

शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ छात्राओं को मनोरंजन एवं ऐतिहासिक ज्ञानवर्धन के उद्देश्य से जयपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों सिटी पैलेस, जंतर-मंतर,

हवा महल, जल महल एवं आमेर किला का भ्रमण भी कराया गया। इस भ्रमण में डॉ. शालिनी, सीमा तथा गैर-शिक्षण वर्ग से दिशेभ ने छात्राओं के साथ सहयोग प्रदान किया। महाविद्यालय प्रशासन ने इस सफल आयोजन पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण छात्राओं के व्यावहारिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक समझ को समृद्ध करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

छात्राओं ने कानूनी साक्षरता प्रशिक्षण शिविर में लिया भाग

राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा 24 मार्च से 27 मार्च 2026 तक चार दिवसीय कानूनी साक्षरता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी की एनएसएस इकाई की तीन छात्राओंकृआरती, तन्नु एवं रूबीकृने भाग लिया। यह प्रशिक्षण शिविर कानूनी अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता फैलाने पर केंद्रित था। शिविर के दौरान विभिन्न महत्वपूर्ण कानूनी विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा ज्ञानवर्धक सत्र आयोजित किए गए, जिनसे छात्राओं को व्यवहारिक एवं उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई। महाविद्यालय प्रशासन ने छात्राओं की सक्रिय भागीदारी पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर छात्राओं में कानूनी जागरूकता बढ़ाने एवं उन्हें सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

छात्राओं का विश्वविद्यालय स्तरीय एनएसएस शिविर में उत्कृष्ट प्रदर्शन

छात्राओं ने चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, हरियाणा द्वारा 15 मार्च से 21 मार्च 2026 तक आयोजित विश्वविद्यालय स्तरीय एनएसएस शिविर में शानदार प्रदर्शन कर महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। इस शिविर में महाविद्यालय की छात्राएं तनु, आरती, हिना एवं पूजा ने सक्रिय भागीदारी निभाई। बीएससी द्वितीय वर्ष की छात्रा तनु ने पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं नारा लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान हासिल कर अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने सभी प्रतिभागी छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने एनएसएस समन्वयक डॉ. निशा शर्मा, एनएसएस अधिकारियों डॉ. नूतन शर्मा एवं डॉ. दीपू सैनी तथा एनएसएस सदस्यों को भी इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। महाविद्यालय प्रशासन ने इस सफलता को छात्राओं की मेहनत एवं मार्गदर्शन का परिणाम बताते हुए भविष्य में भी ऐसे उत्कृष्ट प्रदर्शन की आशा व्यक्त की।

शहीद दिवस पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के दिशा-निर्देशन में इतिहास विभाग द्वारा शहीद दिवस मनाया गया। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 10 छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान छात्राओं ने भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव की क्रांतिकारी विचारधाराओं को प्रस्तुत करते हुए भारत की स्वतंत्रता के लिए उनके अल्पायु में दिए गए महान बलिदान को स्मरण किया। उन्होंने बताया कि इन वीर शहीदों का निःस्वार्थ बलिदान भारतीय इतिहास में सदैव चिरस्मरणीय रहेगा तथा युवा पीढ़ी को प्रेरणा देता रहेगा। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका डॉ. रमाकांत शर्मा (हिंदी विभाग) एवं लविसा शर्मा (अंग्रेजी विभाग ने निभाई। परिणामस्वरूप विशाखा (पी.जी. प्रथम वर्ष ने प्रथम स्थान, श्रुति एवं हर्षिता (बी.ए. अंतिम वर्ष ने द्वितीय स्थान तथा नेहल (बी.ए. प्रथम वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए तथा कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए विभागाध्यक्ष डॉ. रूचि वत्स एवं प्राध्यापिकाएं बबीता चैधरी एवं अर्चना को शुभकामनाएं दीं।

अनुपमा यात्रा

स्वामित्व, मुद्रक एंव प्रकाशक आदर्श महिला महाविद्यालय भिवानी द्वारा दैनिक भास्कर गोहाना रोड़, सुखपुरा रोहतक से मुद्रित करवाकर आदर्श महिला महाविद्यालय, हांसी गेट भिवानी-127021 से प्रकाशित किया जाता है। **Title-Code:-** HARBIL01906 **प्रबंध सम्पादक:** डॉ. अलका मित्तल **कार्यकारी सम्पादक : डॉ. गायत्री बंसल**

मोबाईल नम्बर: 9306940790 **नोट:** सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भिवानी न्यायालय होगा **Gmail:** anupama.express@ammb.ac.in